International Journal of Humanities and Social Science Invention (IJHSSI)
ISSN (Online): 2319 – 7722, ISSN (Print): 2319 – 7714
www.ijhssi.org ||Volume 8 Issue 12 Ser. I || December 2019 || PP 80-84

भारतीय पुनरुत्थान कालीन चित्रकला पर गांधी दर्शन का प्रभाव।

1. डॉ. हेमन्त कुमार राय (असोसिएट प्रोफेसर एवं विभागाध्यक्ष),
2. मूल चन्द वर्मा (असिस्टेंट प्रोफेसर)
चित्रकला विभाग
एम. एम. एच. कालेज गाजियाबाद। 201001

सारांश :

प्रत्येक काल में मानव के विकास उसकी सामाजिक एवं सांस्कृतिक उपलब्धि को हम उसके द्वारा छोड़े गए अवशेषों, चिन्हों, चित्रों, स्मारकों, साहित्यों आदि के माध्यम से जान पाते हैं। प्रागैतिहासिक काल से ही कला मानव के आन्तरिक भावाभिव्यक्ति का सशक्त माध्यम रहीं है। प्राचीन काल में जहां मानव के पास भावाभिव्यक्ति के लिए कला में सीमित साधन थे वही वर्तमान समय में वैज्ञानिक विकास ने असीम संभावनाएं उपलब्ध करा दी हैं। एक ओर जहाँ हम कला में माध्यम और तकनीकी के स्तर पर तरह–तरह के प्रयोग कर रहे हैं, वहीं दूसरी ओर विषय में भी निरंतर प्रयोग जारी हैं। आज की कला को किसी एक धागे में बांधना बहुत मुश्किल है, क्योंकि अब कलाकार के जीवन में उसके निजी अनुभव व विद्यालयी ज्ञान के साथ–साथ कंप्यूटर भी अपनी अहम भूमिका निभा रहा है। आज हम कम्प्यूटर के माध्यम से कई देशों की कलात्मक विशेषताओं का एक साथ तुलनात्मक अध्ययन कर उनका प्रभाव ग्रहण कर सकते हैं।

16 शताब्दी में जब दिल्ली सल्तनत पर मुगलों का अधिपत्य था तब अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे। लेकिन यहां की स्थिति को देख कर उनमें शासन करने की लालसा जाग उठी। अपने इस उद्देश्य की पूर्ति के लिए अंग्रेजों ने बड़ी चलाकी से यहाँ की सभ्यता, संस्कृति व कला पर प्रहार करना शुरू कर दिया। इसीलिए उन्होंने अनेक महाविद्यालयों की स्थापना की और धीरे–धीरे बड़ी होशियारी से हमारे पाठ्यक्रम से हमारी विषय सामग्री निकालकर अपनी विषय सामग्री को लागू कर दिया। परन्तु समाज के कुछ बुद्धिजीवियों ने अग्रेजों की इस कुटिल चाल को समझ लिया और जैसे–जैसे अंग्रेजों की दमनकारी नीति भारतीयों पर बढ़ती गयी वैसे–वैसे लोगों ने उनके खिलाफ आवाज उठाना शुरू कर दिया। सर्वप्रथम बंगाल शैली के कलाकारों ने अपनी खोई हुई परंपरागत कला शैली की पुनः स्थापना करनी शुरू कर दी, जिसे अंग्रेजों ने निकृष्ट बताकर पाठ्यक्रम से बाहर कर दिया था। जहाँ भारत के अन्य महाविद्यालयों में छात्र अंग्रेजी कला की नकल कर रहे थे वहीं बंगाल स्कूल ही एक मात्र ऐसा स्कूल था जिसने शिक्षा में अंग्रेजी कला प्रणाली का विरोध किया और स्पष्ट कर दिया कि भारतीय पारम्परिक कला कलात्मक सौंदर्य में किसी भी कीमत पर अंग्रेजों की कला से कम नहीं है। इस प्रकार अंग्रेजों द्वारा शासनसत्ता कि लालसा में समाप्त की गई भारतीय कला को पुनः जीवित करने का काम बंगाल शैली के कलाकारों ने किया।

परिचय :

प्रत्येक देश यहां तक कि प्रत्येक क्षेत्र की अपनी विशेष पहचान व अपनी कला परंपरा होती है। क्षेत्र विशेष के अनुसार इसकी अपनी कुछ मौलिक विशेषताएं भी होती हैं। भारतीय चित्रकला कई मायने में यूरोपीय चित्र कला शैली से भिन्न है। जहाँ यूरोपीय चित्र शैली यथार्थवादी है वही भारतीय चित्र शैली कल्पनात्मक व धर्म प्रधान है। यूरोपीय चित्र कला शैली में छाया–प्रकाश द्वारा चित्र में उभार व गहराई दिखाने का पूर्ण प्रयास किया गया है, जबकि भारतीय चित्र कला शैली में सपाट रंग लगाए गए हैं। केवल बाह्य रेखाओं द्वारा चित्र में उभार व गोलाई दिखाकर भाव को स्पष्ट करने का प्रयास किया गया है। अंग्रेजों को भारतीय चित्रण तकनीकी बिल्कुल पसंद नहीं थी ना ही उन्हें यहां के परंपरागत विषयों पर बने चित्रों में विशेष रूचि थी इसीलिए अग्रेज अधिकारी वर्डवुड ने यहां तक डाला कि **'एक उबला चर्बी से बना हुआ पकवान भी आत्मा की उत्कट्ट निर्मलता तथा स्थिरता के प्रतीक का काम दे सकता है'** इस बात से यह अंदाजा लगाया जा सकता है कि अंग्रेजों की हमारी कला के प्रति क्या सोच थी। भारतीय चित्रकला ने कभी भी लौकिक आनन्द व शारीरिक सौन्दर्य को अपने चित्रण का विषय नहीं बनाया। यही कारण है कि भारत में बने चित्रों में कहीं भी शारीरिक मांसलता व रूप की सुन्दरता को नहीं दिखाया गया है। चित्रकारों ने सदैव आंतरिक सौंदर्य को चित्रण का प्रमुख विषय माना है। जिसे देकर दर्शक भावविभोर हो अपनी स्वयं की सत्ता को भूलकर चित्र के आनंद में विलीन हो जाता है।

साहित्यिक समीक्षा :

भारतीय पुनरुत्थान कालीन चित्रकला पर कई शोध–पत्र व पुस्तकें आ चुकी हैं। राय कृष्णदास ने ठाकुर शैली को उद्धृत करते हुए बताया है कि किस प्रकार कलाकारों ने प्राचीन भारतीय मुगल, राजस्थानी, पहाड़ी शैली की ओर से प्रभाव ग्रहण कर अपना एक नया मार्ग प्रशस्त किया (दास 2017 वि.स.)। अपनी पुस्तक में शर्मा ने स्पष्ट उल्लेख करते हुए बताया है कि कंपनी शैली का आधार केवल और केवल व्यापार करना था और व्यापार में जिस प्रकार से खरीदार की रुचि को ध्यान को ध्यान में रखा जाता है ठीक उसी प्रकार से अंग्रेजों ने हमारी कला परंपरा को यूरोपीय मांग के अनुसार व्यापार की ओर मोड़ दिया। (शर्मा और शर्मा 2004) जगदीश चंद्रकेश ने अपने अध्ययन में स्पष्ट किया है कि किस प्रकार से कुछ चालाक अंग्रेज विद्वानों ने हमारी कलात्मक समृद्धि को तोड़ मरोड़ कर प्रस्तुत किया जबकि वहीं पर कुछ दूसरे विद्वान अंग्रेज कलासमीक्षकों ने हमारी कला परंपरा की भूरी–भूरी प्रशंसा की व पुनः परंपरागत कला को स्थापित करने में अपनी अहम भूमिका निभाई। (चन्द्रिकेश 2010) इन्हीं बातों का समर्थन करते हुए डॉ गिर्राज ने अपने ऐतिहासिक अध्ययन में बताया कि ई.बी.हैविल, बंगाल के गवर्नर सर कारमाइकेल तथा लॉर्ड रोनाल्डसे शुरू से भारतीय कला के पक्षधर रहे। ई.वी.हैविल महोदय स्वयं अंग्रेज होते हुए भी यूरोपीय चित्रकला शैली का विरोध करते हुए कहते हैं कि यूरोपीय चित्रकला तो केवल सांसारिक वस्तुओं पर आधारित है वह केवल वाह्य रूप के चित्रांकन को ही महत्व देती है। जबकि भारतीय चित्रकला शैली की प्रशंसा करते हुए कहते हैं कि भारतीय चित्रकला शैली प्राचीन काल से ही सर्वव्यापी अमर और अपार है। इसमें मानव के मन व उसकी आत्मा को छूने का प्रयास किया गया है। (अग्रवाल 2015) इस प्रकार अंग्रेज भारत में व्यापार करने के उद्देश्य से आए थे और वह सभी चीजों को उसी नजरिए से देखते थे। उन्होंने अपनी इसी उद्देश्य की पूर्ति के लिए हमारी कला को भी व्यापारिक बना दिया। ऐसी कला जिसके ज्यादा से ज्यादा खरीदार हो, इसीलिए अंग्रेजों ने कला के भाव पक्ष को छोड़कर उसके शिल्प पक्ष पर ज्यादा ध्यान दिया।

अध्ययन का उद्देश्य :

1– वर्तमान परिवेश में भारतीय परम्परागत कला शैली के कलात्मक सौन्दर्य को स्पष्ट करना।
2– कला में मानव जीवन व उसकी समस्या जैसे विषयों को महत्व देना।
3– भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में बंगाल शैली के कलाकारों के योगदान को स्पष्ट करना।

अनुसंधान क्रियाविधि :

यह अध्ययन पूर्णतया ऐतिहासिक स्रोतों पर आधारित है। विभिन्न कला साहित्य की पुस्तकों, पत्र–पत्रिकाओं, लेखों व बंगाल शैली के चित्रकारों के चित्रों व उनके द्वारा दिए गए विवरणों के आधार पर 19वीं शदी के अन्तिम दशक व भारतीय स्वतंत्रता से पूर्व कला स्थिति का विश्लेषण कर पुनरूत्थान कलीन चित्रकला को व्यवस्थित रूप में प्रस्तुत करना है। इस शोध पत्र में मैंने यह दिखाने का प्रयास किया है कि किस प्रकार चित्रकारों नें देश की आजादी में अपना योगदान दिया।

अंग्रेजी शासन में भारतीय चित्रकला की स्थिति :

1857 की क्रांति के बाद अंग्रेजों का प्रभुत्व संपूर्ण भारत में बहुत तेजी से बढ़ने लगा। अब उनका दखल न केवल भारत के राजनीतिक वरन् सामाजिक, सास्कृतिक एवं धार्मिक क्षेत्रों में भी बहुत तेजी से बढ़ने लगा। भारत के जमीदार, रहीस यहां तक कि पढ़े–लिखे नौजवान भी अंग्रेजों की कला परम्परा उनके रीति–रिवाज, वेशभूषा, खानपान, उनका पहनावा आदि सब बातों की नकल कर स्वयं को गौरवान्वित महसूस करते थे। अंग्रेजीयत के प्रति भारतीय उच्च वर्ग की अंधभक्ति व अपने रीत–रिवाजों, कला परंपराओं व संस्कृतियों के प्रति हीन भावना ने हमारी कला परंपरा, शिक्षा व संस्कृति को अकल्पनीय क्षति पहुंचाई। इस प्रकार भारत में राज दरबारों व धनिकों से पोषित होने वाली कला के बाद व स्वतंत्र भारत के पहले कला कर्म की स्थिति बहुत ही नाजुक दौर से गुजरने लगी। चूंकि अंग्रेज भारत को ना सिर्फ राजनैतिक बल्कि सांस्कृतिक गुलाम भी बनाना चाहते थे। इसी कारण उन्होंने जितने भी कला महाविद्यालयों की स्थापना की उन सभी में उन्हीं के रुचि के हिसाब से शिक्षण कार्य किया जाता था। एक ऐसी कला जो अंग्रेजों की रुचि और उनके उद्योग धंधों की पूर्ति कर सके। इसलिए महाविद्यालयों में अब उन्हीं की मनपसंद विषयों को पढ़ाया जाने लगा। अब ज्यादातर महाविद्यालयों में कला पर कम क्राफ्ट पर ज्यादा जोर दिया जाता था।

भारतीय चित्रकला का पुनरूत्थान एवं विकास :

ई.वी. हैविल जी ने 1896 ई. में कलकत्ता स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट में प्राचार्य का पदभार संभाला। हैविल जी ने ही सर्वप्रथम भारतीय कला परंपरा के वास्तविक मर्म को समझा और उसे प्रोत्साहित किया। यूरोपीय चित्रण परम्परा को समझाने के लिए महाविद्यालय में रखे गए सभी माडलों को बाहर फिकवाकर पुनः भारतीय विषय, तकनीकि व चित्रण परम्परा की कक्षाएं शुरू कर दी, जिसके परिणाम स्वरुप बंगाल स्कूल ऑफ आर्ट एण्ड क्राफ्ट अपनी परंपरा और भारतीय निजता को कला में कायम रखने में सक्षम रहा। सच्चे अर्थों में कहा जाए तो बंगाल स्कूल शुरु से अपने स्वदेशी आवरण में लिपटा रहा। किंतु दूसरी ओर जे.जे. स्कूल ऑफ आर्ट मुम्बई में इससे विपरीत प्रभाव रहा। वहां से प्रशिक्षित हो रहे कला शिक्षार्थियों पर पाश्चात्य शैली का पूरा प्रभाव रहा।

महात्मा गांधी द्वारा चलाए जा रहे स्वदेशी आंदोलनों से प्रभावित होकर सर्वप्रथम कला के क्षेत्र में अवनींद्र नाथ ठाकुर ने ई.वी. हेविल के सहयोग से अपने शिष्यों नंदलाल बसु, क्षितीन्द्रनाथ मजूमदार, डी.पी. राय चौधरी, असित कुमार हल्दार, के. वेंकट्टप्पा, मुकुल चन्द्र डे, मनीष डे, शारदा चरण उकील, समरेन्द्र नाथ गुप्त व यामिनी राय आदि के द्वारा नये–नये समसामयिक भारतीय विषयों पर चित्रांकन करना शुरू कर दिया। महात्मा गांधी के स्वदेशी आंदोलन का प्रभाव न सिर्फ चित्र कला के क्षेत्र पर पड़ा अपितु लघु उद्योग जैसे काष्ठ कला, धातुकर्म, क्ले मॉडलिंग, मिट्टी की मूर्तियां, वस्त्र बुनाई कला आदि पर भी पड़ा। लघु उद्योगों को बढ़ावा देने के लिए गगनेंद्रनाथ ठाकुर ने अपने भाई अवनींद्र नाथ ठाकुर की सहायता से ष्बंगाल गृह उद्योग संघष की स्थापना की। इस प्रकार स्वतंत्रता से पूर्व भारतीय कला क्षेत्र में दो कला महाविद्यालयों का सबसे ज्यादा प्रभाव रहा। एक बंगाल स्कूल जो कला के क्षेत्र में नितांत स्वदेशी व भारतीयता का पक्षधर था तथा दूसरा जे. जे. स्कूल आफ आर्ट जो पश्चिमी देशों की नकल परंपरा पर आगे बढ़ रहा था। किंतु भारत में जैसे–जैसे स्वतंत्रता आंदोलन अपनी गति पकड़ता गया, वैसे–वैसे कलाकारों के मन में भी अपने कला कर्म के प्रति स्वतंत्रता के भाव आने लगे। जिसके परिणाम स्वरुप भारत में विभिन्न प्रकार के कला संगठनों ने जन्म लिया। जैसे यंग तुर्क (1937) मुम्बई में, कलकत्ता ग्रुप ऑफ आर्ट (1943) कलकत्ता में, प्रोग्रेसिव ग्रुप आफ आर्ट (1947) मुम्बई में।

1905 में जब अंग्रेजों ने "फूट डालो और राज करो" की अपनी नीति के आधार पर भारत को कमजोर करने के लिए बंगाल विभाजन की घोषणा की तब इसके विरोध में देश के हर कोने से आवाज उठने लगी। एक बार फिर भारतीय जनमानस में स्वाधीनता की लहर दौड़ने लगी इससे प्रभावित होकर अवनीन्द्रनाथ ठाकुर ने 1905 में ही अपना विश्वप्रसिद्ध चित्र ष्भारत माताष की रचना कर डाली। नितांत भारतीय शैली में निर्मित इस चित्र के माध्यम से अवनींद्र नाथ ठाकुर ने भारतीय जनमानस को न सिर्फ एकता के सूत्र में पिरोने का प्रयास किया बल्कि लोगों का ध्यान नारी शक्ति, उनकी ऊर्जा व भारतीय स्वतंत्रता आंदोलन में उनके योगदान के प्रति भी आकृष्ट किया। स्वदेशी प्रभाव के कारण ही बंगाल की अल्पना पर बनाए गए अपने सभी रेखा चित्रों को एकत्रित कर एक पुस्तक के रूप में प्रकाशित किया, जिससे ज्यादा से ज्यादा लोग अपनी कला के प्रभाव व उसके लालित्य को आत्मसात कर सकें। सच्चे अर्थों में बंगाल शैली के चित्रकारों ने समाज की उन समस्याओं को भी अपने चित्रों के माध्यम से जनता के सम्मुख रखना शुरू कर दिया। जिसे परंपरागत भारतीय चित्रकला ने कभी अपने विषय के रूप में नहीं अपनाया था, और न ही अंग्रेजों को इस प्रकार के भारतीयों की निजी समस्या पर बने चित्रों में कोई विशेष रुचि थी, जिसे दूर कर ही एक सुदृढ़ समाज की स्थापना की जा सकती थी। क्योंकि आजादी के बाद स्वतंत्र भारत के सामने सबसे बड़ी समस्या सामाजिक, सास्कृतिक, धार्मिक व आर्थिक विषमता को दूर कर एक सुदृढ़ समाज की स्थापना था। समाज के इस लक्ष्य को महात्मा गांधी द्वारा सुझाए गए मार्ग द्वारा ही प्राप्त किया जा सकता था। महात्मा गांधी का यह मानना था कि हम एक शांतिपूर्ण समाज की स्थापना तभी कर सकते हैं जब दोनों वर्ग बिना किसी भेद–भाव के आपस में मिलकर काम करें। अर्थात उच्चवर्ग, निम्नवर्ग के पोषण में योगदान करें। और समाज की ऊंची समझी जाने वाली जातियों के लोग निम्न समझी जाने वाली जातियों के साथ मिलकर छुआ–छूत उन्मूलन जैसे कार्यक्रम चलाएं। इसीलिए महात्मा गांधी जी ने 1932 में ष्हरिजन सेवक संघष की स्थापना की और देश के बड़े–बड़े नेता व धनिकों को इसके साथ जोड़ा। महात्मा गांधी के स्वदेशी व सामाजिक आंदोलनों के प्रभाव से यामिनी राय ने यूरोपीय शैली में व्यक्ति चित्रण की विधा को छोड़कर लोककला चित्र शैली की ओर मुड़ गए और आजीवन गांव में रची जाने वाली लोक कला पर अपनी कूची चलाते रहे। आस–पास के गांवों में जाकर वहां बनने वाली लोक कला, मिट्टी के बर्तन, खिलौने पर की जाने वाली चित्रकारी व काष्ठ के खिलौनों पर सजावटी काम के साथ–साथ बंगाल की अल्पना शैली से प्रभाव ग्रहण करना शुरु कर दिया। अब उनके चित्रों में ग्रामीण जीवन व आदिवासी जनजातियों की कलाएं व उनके रुप विशेष रूप से आने लगे। चटक व सपाट रंगो को चित्रों में भरकर गहरी सीमा रेखाओं द्वारा उभार कर चित्रण का एक नया रूप जनता के सामने प्रस्तुत किया जिसका विषय, रंग योजना व चित्रण तकनीकी नितांत देशज थी जिसे देखकर लोग अत्यधिक उत्साहित व प्रभावित हुए।

डी.पी. राय चौधरी के चित्रों में शुरू से ही मातृभूमि के प्रति प्रेम को देखा जा सकता है। उन्होंने चित्रकला में अपने विषय के रूप में पूर्वी भारतीय जनजातियों को समाहित किया। उनके विषयों में भूटानी,नेपाली, संथाल–संथाली, थारु आदि जनजीवन के साथ–साथ वहां की नारियां प्रमुख रुप से आती रही हैं। चित्रों के साथ–साथ अनेक ऐसे विश्व प्रसिद्ध मूर्ति शिल्प भी डी.पी. राय चौधरी जी ने भारत को दिए हैं जिसे देखकर आज भी भारतीय स्वतंत्रता संग्राम में लोगों के अभूतपूर्व योगदान की यादें ताजा हो जाती है। उनके बनाये मूर्ति शिल्प केवल एक मूर्ति शिल्प ही नहीं वरन् अपने आप में स्वतंत्रता संग्राम की एक कहानी हैं। जिस प्रकार रामकिंकर बैज के मूर्ति शिल्पों में अपनी मिट्टी की खुशबू और अपना एक अलग आवेश है, जिसे केवल भारतीय मिट्टी में पला सहृदय चित्रकार ही आंक सकता है। ठीक उसी प्रकार राय जी के सभी मूर्ति शिल्पों में अपना एक अलग आवेश है जिसे देखकर ऐसा लगता है कि जैसे वो अपनी स्वयं की कहानी कह रहे हो। महात्मा गांधी के ष्अंग्रेजों भारत छोड़ो आंदोलनष 1942 के समर्थन में जब 7 स्कूली बच्चों ने पटना सचिवालय पर तिरंगा झंडा फहराने का प्रयास किया तो अंग्रेजों ने उन्हें गोली मारकर उनकी हत्या कर दी। स्कूली बच्चों के इस अदम्य शौर्य को मूर्ति मान करते हुए डी.पी. राय चौधरी ने "शहीद स्मारक" नाम से उन सात स्कूली बच्चों का मूर्ति शिल्प पटना सचिवालय के सामने स्थापित किया जो आज भी उनके शौर्य गाथा और अंग्रेजों के अमानवीय अत्याचार की कहानी बयां करता है। इसी प्रकार दिल्ली में पटेल मार्ग पर स्थापित "स्वतंत्रता स्मारक" मूर्ति शिल्प अपने आप में अद्वितीय संदेश देता है। 11 व्यक्तियों से युक्त इस मूर्ति शिल्प में डी.पी. राय चौधरी ने भारतीय एकता में अनेकता के दर्शन को मूर्तिमान किया है। सबसे आगे महात्मा गांधी के मूर्ति शिल्प को बनाकर गांधी जी को भारतीय स्वाधीनता संग्राम में सभी का नेतृत्व करते हुए दिखाया गया है। बाकी अन्य मूर्ति शिल्पों को वेशभूषा व पहनावे से भारत के विभिन्न राज्यों की संस्कृतियों का प्रतिनिधित्व करते हुए दिखाया है।

महात्मा गांधी का ऐसा मानना था, कि चित्रकार ही वह व्यक्ति होता है। जो अपनी कला के माध्यम से समाज की समस्या व अपनी बात को सारगर्भित ढंग से आम जनता के सम्मुख रख सकता है। इसीलिए महात्मा गांधी ने 1938 में हरिपुरा में चार दिवस (19 फरवरी से 22 फरवरी) तक चले कांग्रेस के 51वें राष्ट्रीय सम्मेलन में नंदलाल बसु को पंडाल सजाने का कार्य सौंपा। चित्रण से पूर्व महात्मा गांधी ने नंदलाल बसु से चित्रों के विषय में परामर्श लिया और नंदलाल बसु से कहा कि षचित्र साधना घर के लिए मत करो, बाहर के लिए करो, मार्ग में रखने के लिए चित्र बनाओ जिन्हें गांव के आदमी भी देखें समझें और उसका आनंद उठाएं।ष नंदलाल बसु जी ने वैसा ही किया और अपने कला सहयोगियों व विद्यार्थियों की सहायता से बड़े ही मार्मिक ढ़ग से ग्रामीण जीवन के चित्रों का अंकन किया। समाज में कृ षक वर्ग की उपयोगिता और उनकी तरह–तरह की समस्याओं व चुनौतियों के साथ–साथ ग्रामीण नारी शक्ति उनकी उदारता, सहनशीलता और आध्यात्मिकता पर चित्र श्रृंखला बनायी। किसी बड़े आयोजन में ग्रामीण जीवन के सरोकार को चित्रों के माध्यम से इतने बड़े स्तर पर पहली बार दिखाया गया था। किंतु दुर्भाग्य से आज उन चित्रों के कोई अवशेष हमारे बीच नहीं हैं। महात्मा गांधी के परामर्श से जवाहरलाल नेहरू ने नंदलाल बसु को भारतीय संविधान नामक पुस्तक चित्रित करने के लिए आमंत्रित किया। नंदलाल बसु ने भारतीय संविधान के प्रत्येक भाग पर एक चित्र बनाया। इस प्रकार संविधान के 22 भागों के लिए नंदलाल बसु को 22 चित्र बनाने पड़े। नंदलाल बसु ने भारतीय इतिहास के क्रमिक विकास को इन चित्रों के माध्यम से भारतीय संविधान में दिखाया। बसु जी ने महात्मा गांधी की दांडी यात्रा को अपने चित्रों में दिखाकर भारतीय जनमानस का ध्यान स्वतंत्रता आंदोलन की ओर आकृष्ट करने का भरसक प्रयास किया। बंगाल के पुनरुत्थान शैली के चित्रकारों ने न केवल विषय के आधार पर पाश्चात्य शैली का विरोध किया वरन् माध्यम,तकनीकी व रंगांकन शैली के आधार पर भी यूरोपीय चित्रकला का भरपूर विरोध किया। ये सभी चित्रकार पूर्णता स्वदेशी शैली के हमेशा से पक्षधर रहे हैं। इसी कारण तैल रंग चित्रण की विधा को छोड़कर इन्होंने जल रंग व टेंपरा जैसी प्राचीन भारतीय परम्परागत चित्रण शैली को बनाए रखा। चित्रों में सपाट रंग भरना, छाया व प्रकाश के लिए उसी तान के गाढ़े व हल्के बलों का प्रयोग कर उभार व गोलाई का प्रभाव दिखाना तथा सशक्त रेखांकन द्वारा चित्र के संपूर्ण भाव को प्रकट करना बंगाल शैली के चित्रकारों की अपनी परंपरागत विधा रही है। इन्होंने हमेशा से यूरोपीय यथार्थवादी चित्रांकन शैली का विरोध किया। जिस प्रकार महात्मा गांधी ने स्वदेशी आंदोलन चलाकर भारत को अंग्रेजी दासता से मुक्त कराना चाहते थे ठीक उसी प्रकार बंगाल शैली के चित्रकार भी यूरोपीय शैली का विरोध कर अपने देश में देशज कला शैली को स्थापित करना चाहते थे।

निष्कर्ष :

इस प्रकार निश्चित रूप से कहा जा सकता है कि भारतीय स्वाधीनता संग्राम में हमारे देश के बंगाल शैली के चित्रकार महात्मा गांधी के आंदोलन में अन्य देशभक्तों की तरह कंधे से कंधा मिलाएं खड़े थे। सभी देशभक्त चित्रकारों ने हर तरीके से अंग्रेजी चित्रण शैली का विरोध कर भारत में अपनी निजी परंपरागत भारतीय चित्रण परंपरा को बनाए रखने

में अहम भूमिका निभाई। इन चित्रकारों ने अपने चित्रों के माध्यम से समाज में स्वाधीनता संग्राम के प्रति लोगों में जागरूकता लाने का पूरा प्रयास करने के साथ–साथ समाज में निवास करने वाली निम्न जातियों की समस्याओं को भी अपने चित्रों के माध्यम से जनता के सम्मुख रखकर लोगों का ध्यान उनकी समस्याओं की ओर आकृष्ट किया। इस प्रकार समाज मे फैली हुई विसंगतियों को दूर करने के लिए समाज के हर व्यक्ति को अपनी जिम्मेदारी का निर्वाहन इमानदारी पूर्वक करना होगा। जिसमें एक कलाकार का काम सामान्य नागरिक से और ज्यादा जिम्मेदारी पूर्ण हो जाता है। क्योंकि वह अपनी कला के माध्यम से समाज की मान्यता व परंपराएं तथा उसमें घट रही घटनाओं को अधिक मार्मिक ढंग से ज्यादा से ज्यादा लोगों के बीच पहुंचा कर उसके सार्थक समाधान की ओर जनता का ध्यान आकर्षित कर सकता है।

सन्दर्भ :

• अग्रवाल, डॉ. वासुदेव शरण : 2005 "चित्राचार्य अवनीन्द्र नाथ, नन्द लाल और जामिनी राय" समकालीन कला अंक 28, ललित कला अकादमी नई दिल्ली।

• अग्रवाल, डॉ गिर्राज किशोर : 2015"आधुनिक भारतीय चित्रकला" संजय पब्लिकेशन राजा मण्डी, आगरा–2। पृष्ठ संख्या– 28, 32, 33, 34 तथा 83

• भारद्वाज, विनोद : 2006, "वृहद आधुनिक कला कोश" वाणी प्रकाशन नई दिल्ली।

• चंद्रिका, जगदीश : 2010 'बंगाल शैली के प्रादुर्भाव की भूमिका' भारतीय कला चिन्तन – दो, यश पब्लिकेशन '909, चांद मोहल्ला, गांधी नगर, दिल्ली। पृष्ठ संख्या – 265,266,267,तथा 268

• दास, रायकृष्ण : "2017 वि.स. भारत की चित्रकला" भारती–भण्डार लीडर प्रेस, इलाहाबाद, उत्तर प्रदेश। पृष्ठ संख्या– 113, 114

• शर्मा, डॉ. एस.के. व डॉ. अम्बिका : 2004 'भारतीय चित्रकला का उद्देश्य पूर्ण अध्ययन' मानसी प्रकाशन 39, कैलाश पुरी, मेंरठ–250002 पृष्ठ संख्या–36

• www-abhivyakti-hindi-org (23/12/2019)